स्त्री शिक्षा के विरोध में कुछ तर्क आज भी बहुत मशहूर हैं कि, इससे परिवार संस्था का विघटन हो जाएगा, कि स्त्रियां बिगड़ जाएंगी, कि स्त्री तो घर की शोभा हैं आदि आदि। ये तर्क (महावीर प्रसाद द्विवेदी की भाषा में कुतर्क) पितृसत्ता को कायम रखने की मंशा से दिए जाते हैं और इनकी पुष्टि के लिए इतिहास या माइथोलॉजी से प्रमाण जुटाए जाते हैं। पुरातनपंथियों के लिए आज भी यह प्रिय बहस है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1914 में इस प्रकार के सभी कुतर्कों का जवाब दिया। ये स्वाधीनता आंदोलन का दौर था और भारतीय समाज सही मायने में सभी की स्वाधीनता के सवालों से जूझ रहा था।

स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन

❑ महावीर प्रसाद द्विवेदी

बड़े शोक की बात है, आजकल भी ऐसे लोग विद्यमान हैं जो स्त्रियों को पढ़ाना उनके और गृह-सुख के नाश का कारण समझते हैं। और, लोग भी ऐसे वैसे नहीं, सुशिक्षित लोग - ऐसे लोग जिन्होंने बड़े-बड़े स्कूलों और शायद कॉलेजों में भी शिक्षा पाई है, जो धर्मशास्त्र और संस्कृत के ग्रन्थ साहित्य से परिचय रखते हैं, और जिनका पेशा कुशिक्षितों को शिक्षित करना, कुमार्गगामियों को सुमार्गगामी बनाना और अधार्मिकों को धर्मतत्त्व समझाना है। उनकी दलीलें सुन लीजिए -

1. पुराने संस्कृत-कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियों से अपढ़ों की भाषा में बातें कराई गई हैं। इससे प्रमाणित होता है कि इस देश में स्त्रियों को पढ़ाने की चाल न थी। होती तो इतिहास-पुराणादि में उनको पढ़ाने की नियम-बद्ध प्रणाली जरूर लिखी मिलती।

2. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। शकुन्तला इतना कम पढ़ी थी कि गंवारों की भाषा में मुश्किल से एक छोटा सा श्लोक वह लिख सकी थी। तिस पर भी उसकी इस इतनी कम शिक्षा ने भी अनर्थ कर डाला। शकुन्तला ने जो कटु वाक्य दुष्यन्त को कहे, वह इस पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था।

3. जिस भाषा में शकुन्तला ने श्लोक रचा था वह अपढ़ों की भाषा थी। अतएव नागरिकों की भाषा की बात तो दूर रही, अपढ़ गंवारों की भी भाषा पढ़ाना स्त्रियों को बरबाद करना है।

इस तरह की दलीलों का सबसे अधिक प्रभावशाली उत्तर उपेक्षा ही है। तथापि हम दो चार बातें लिख देते हैं।

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गंवार होने का। वाल्मीकि-रामायण के तो बन्दर तक संस्कृत बोलते हैं। बन्दर संस्कृत बोल सकते थे, स्त्रियां न बोल सकती थीं ! अच्छा तो उत्तर रामचरित में ऋषियों की वेदान्त-वादिनी पत्नियां कौनसी भाषा बोलती थीं ? उनकी संस्कृत क्या कोई गंवारी संस्कृत थी ? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के हैं उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी ? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रन्थ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान् शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते ? बौद्धों का 'त्रिपिटक' ग्रन्थ हमारे महाभारत से भी बड़ा है। उसकी रचना प्राकृत में की जाने का एक मात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्राकृत ही सर्व-साधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं। जिन पण्डितों ने 'गाथा-सप्तशती', 'सेतुबन्ध-महाकाव्य' और 'कुमारपालचरित' आदि ग्रन्थ प्राकृत में बनाए हैं वे यदि अपढ़ और गंवार थे तो हिन्दी के प्रसिद्ध से भी प्रसिद्ध अखबार का सम्पादक इस जमाने में अपढ़ और गंवार कहा जा सकता है;

क्योंकि वह अपने जमाने की प्रचलित भाषा में अखबार लिखता है। हिन्दी, बंगला आदि भाषाएं आजकल की प्राकृत हैं, शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री और पाली आदि भाषाएं उस जमाने की थीं। प्राकृत पढ़ कर भी उस जमाने में लोग उसी तरह सभ्य, शिक्षित और पण्डित हो सकते थे जिस तरह की हिन्दी, बंगला, मराठी आदि भाषाएं पढ़ कर इस जमाने में हम हो सकते हैं ? फिर प्राकृत बोलना अपढ़ होने का सबूत है, यह बात कैसे मानी जा सकती है ?

जिस समय आचार्यों ने नाट्य-शास्त्र-संबंधी नियम बनाए थे उस समय सर्व साधारण की भाषा संस्कृत न थी। चुने हुए लोग ही संस्कृत बोलते या बोल सकते थे। इसी से उन्होंने उनकी भाषा संस्कृत और दूसरे लोगों तथा स्त्रियों की भाषा प्राकृत रखने का नियम कर दिया।

पुराने जमाने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था। फिर नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य। और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो ? पुराने जमाने में विमान उड़ते थे। बताइए उनके बनाने की विद्या सिखाने वाला कोई शास्त्र ! बड़े-बड़े जहाजों पर सवार होकर लोग द्वीपान्तरों को जाते थे। दिखाइए, जहाज बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रन्थ ! पुराणादि में विमानों और जहाजों द्वारा की गई यात्राओं के हवाले देख कर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परन्तु पुराने ग्रन्थों में अनेक प्रगल्भ पण्डिताओं के नामोल्लेख देख कर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मूर्ख, अपढ़ और गंवार बताते हैं ! इस तर्कशास्त्रज्ञता और इस न्यायशीलता की बलिहारी ! वेदों को प्राय: सभी हिन्दू ईश्वर-कृत मानते हैं। सो ईश्वर तो वेद-मन्त्रों की रचना अथवा उनका दर्शन विश्ववरा आदि स्त्रियों से करावे और हम उन्हें ककहरा पढ़ाना भी पाप समझें। शीला और विज्जा आदि कौन थीं ? वे स्त्री थीं या नहीं ? बड़े-बड़े पुरुष कवियों से आदृत हुई हैं या नहीं ? 'शार्ङ्गधर-पद्धति' में उनकी कविता के नमूने हैं या नहीं ? बौद्ध-ग्रन्थ 'त्रिपिटक' के अन्तर्गत थेरीगाथा में जिन सैकड़ों स्त्रियों की पद्य-रचना उद्धृत है वे क्या अपढ़ थीं ? जिस भारत में कुमारिकाओं को चित्र बनाने, नाचने, गाने, बजाने, फूल चुनने, हार गूंथने, पैर मलने तक की कला सीखने की आज्ञा थी उनको लिखने पढ़ने की आज्ञा न थी ! कौन विज्ञ ऐसी बात मुख से निकालेगा ? और, कोई निकाले भी तो मानेगा कौन ?

अत्रि की पत्नी पत्नी-धर्म पर व्याख्यान देते समय घण्टों पाण्डित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मण्डन मिश्र की सह-धर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे ! गजब ! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी ! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है। न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करतीं। यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है। समझे ! एम. ए., बी. ए., शास्त्री और आचार्य होकर पुरुष जो स्त्रियों पर हण्टर फटकारते हैं और डण्डों से उनकी खबर लेते हैं वह सारा सदाचार पुरुषों की पढ़ाई का सुफल है ! स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूंट ! ऐसी ही दलीलों और दृष्टान्तों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रख कर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं !

मान लीजिए कि पुराने जमाने में भारत की एक भी स्त्री पढ़ी लिखी न थी। न सही। उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की जरूरत न समझी गई होगी। पर अब तो है। अतएव पढ़ाना चाहिए । हमने सैकड़ों पुराने नियमों, आदेशों और प्रणालियों को तोड़ दिया है या नहीं ? तो, चलिए, स्त्रियों को अपढ़ रखने की इस पुरानी चाल को भी तोड़ दें। हमारी प्रार्थना तो यह है कि स्त्री-शिक्षा के विपक्षियों को क्षण भर के लिए भी इस कल्पना को अपने मन में स्थान न देना चाहिए कि पुराने जमाने में यहां की सारी स्त्रियों अपढ़ थीं अथवा उन्हें पढ़ने की आज्ञा न थी। जो लोग पुराणों में पढ़ी-लिखी स्त्रियों के हवाले मांगते हैं उन्हें श्रीमद्भागवत, दशम स्कन्ध, के उत्तरार्द्ध का त्रेपनवां अध्याय पढ़ना चाहिए। उसमें रुक्मिणी-हरण की कथा है। रुक्मिणी ने जो एक लम्बा-चौड़ा प्रेम-पत्र एकान्त में लिखकर, एक ब्राह्मण के हाथ, श्रीकृष्ण को भेजा था वह तो प्राकृत में न था। उसके प्राकृत में होने का उल्लेख भागवत में तो नहीं। उसमें रुक्मिणी ने जो पाण्डित्य दिखाया है वह उसके अपढ़ और अल्पज्ञ होने अथवा गंवारपन का सूचक नहीं। पुराने ढंग के पक्के सनातन धर्मावलंबियों की दृष्टि में तो नाटकों की अपेक्षा भागवत का महत्त्व बहुत ही अधिक होना चाहिए। इस दशा में यदि उनमें से कोई यह कहे कि सभी प्राक्कालीन स्त्रियां अपढ़ होती थीं तो उसकी बात पर विश्वास करने की जरूरत नहीं। भागवत की बात यदि पुराणकार या कवि की कल्पना मानी जाए तो नाटकों की बात उससे भी गई बीती समझी जानी चाहिए।

स्त्रियों का किया हुआ अनर्थ यदि पढ़ाने का ही परिणाम है तो पुरुषों का किया हुआ अनर्थ भी उनकी विद्या और शिक्षा का ही परिणाम समझना चाहिए। बम के गोले फेंकना, नर हत्या करना, डाके डालना, चोरियां करना, घूस लेना, व्यभिचार करना - यह सब यदि पढ़ने-लिखने ही का परिणाम हो तो ये सारे कॉलेज, स्कूल और पाठशालाएं बन्द हो जानी चाहिएं। परन्तु विक्षिप्तों, वातव्यथितों

और ग्रहग्रस्तों के सिवा ऐसी दलीलें पेश करने वाले बहुत ही कम मिलेंगे। शकुन्तला ने दुष्यन्त को कटु वाक्य कह कर कौनसी अस्वाभाविकता दिखाई ? क्या वह यह कहती कि - ''आर्य पुत्र, शाबाश ! बड़ा अच्छा काम किया जो मेरे साथ गान्धर्व-विवाह करके मुकर गए। नीति, न्याय, सदाचार और धर्म की आप प्रत्यक्ष मूर्ति हैं !'' पत्नी पर घोर से घोर अत्याचार करके जो उससे ऐसी आशा रखते हैं वे मनुष्य-स्वभाव का किंचित् भी ज्ञान नहीं रखते। सीता से अधिक साध्वी स्त्री नहीं सुनी गई। जिस कवि ने 'शकुन्तला' नाटक में अपमानित हुई शकुन्तला से दुष्यन्त के विषय में दुर्वाक्य कहाया है उसी ने परित्यक्त होने पर सीता से रामचन्द्र के विषय में क्या कहाया है, सुनिए -

वाच्यस्त्वया मद्वचनात् स राजा-

वह्नी विशुद्धामपि यत्समक्षम्।

मां लोकवाद श्रवणादहासो:

श्रुतस्य तत्किं सदृशं कुलस्य ?

लक्ष्मण ! जरा उस राजा से कह देना कि मैंने तो तुम्हारी आंख के सामने ही आग में कूद कर अपनी विशुद्धता साबित कर दी थी। तिस पर भी, लोगों के मुख से निकला मिथ्यावाद सुनकर ही, तुमने मुझे छोड़ दिया ! क्या यह बात तुम्हारे कुल के अनुरूप है ? अथवा क्या यह तुम्हारी विद्वता या महत्ता को शोभा देने वाली है ? अर्थात् तुम्हारा यह अन्याय तुम्हारे कुल, शील, पाण्डित्य सभी पर बट्टा लगाने वाला है।

सीता का यह सन्देश कटु नहीं तो क्या मीठा है ? रामचन्द्र के कुल पर भी कलंकारोपण करना छोटी निर्भर्त्सना नहीं। सीता ने तो रामचन्द्र को नाथ, देव, आर्यपुत्र आदि कहे जाने के योग्य भी नहीं समझा। 'राजा' मात्र कह कर उनके पास अपना सन्देशा भेजा। यह उक्ति न किसी वेश्या पुत्री की है, न किसी गंवार स्त्री की; किन्तु महाब्रह्म-ज्ञानी राजा जनक की लड़की और मन्वादि महर्षियों के धर्मशास्त्रों का ज्ञान रखने वाली रानी की -

नृपस्य वर्णाश्रमपालनं यत्

स एव धर्मो मनुना प्रणीत:

सीता की धर्मशास्त्रज्ञता का यह प्रमाण, वहीं, आगे चलकर, कुछ ही दूर पर, कवि ने दिया है। सीता-परित्याग के कारण वाल्मीकि के समान शान्त, नीतिज्ञ और क्षमाशील तपस्वी तक ने - 'अस्त्येव मन्युर्भरताग्रजे मे' - कहकर रामचन्द्र पर क्रोध प्रकट किया है। अतएव, शकुन्तला की तरह, पति द्वारा अपने त्याग को अन्याय समझने वाली सीता का, रामचन्द्र के विषय में, कटुवाक्य कहना सर्वथा स्वाभाविक है। न यह पढ़ने-लिखने का परिणाम है न गंवारपन का, न अकुलीनता का।

पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं - अपढ़ों और पढ़े-लिखों, दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति-विशेष का चाल चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए। जो लोग यह कहते हैं कि पुराने जमाने में यहां स्त्रियां न पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान बूझ कर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दण्डनीय हैं। क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है - समाज की उन्नति में बाधा डालना है।

'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना-लिखना भी उसी के अन्तर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बन्द कर दिए जाएं ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहां पर देना चाहिए - घर में या स्कूल में - इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आवे सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है - वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

(सितम्बर, 1914 की 'सरस्वती' में 'पढ़े-लिखों का पाण्डित्य' शीर्षक से प्रकाशित। महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली से साभार) ◆